सफर के साथियो के हुकूक

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

नोटः यहां जो हुकूक बयान हुए है उनमे मुस्लिम और गैर मुस्लिम बराबर है.

१} मिश्कात की रिवायत का खुलासा | रावी सहल बिन सअद रदी.

जो शख्स किसी गिरोह के साथ सफर कर रहा हो चाहिए की उन्की खिदमत करे, उन्की जरूरतों का लिहाज़ रखे और उन्को हर तरह आराम पहुंचाने की कोशिश करे, इस्का बहुत बडा सवाब है इस नेकी से बढकर अगर कोई और नेकी हो सकती है तो ये की आदमी अल्लाह की राह में लडते हुवे शहादत पाए.

२} मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी अबू सइद खुदरी रदी.

एक बार जब की हम सफर में थे रसूलुल्लाहﷺ के पास एक

आदमी ऊंतनी पर सवार हो कर आया तो उसने दाएं-बाएं मुड कर देखना शुरू किया तो आपﷺ ने फरमाया - की जिस शख्स के पास कोई अधिक सवारी हो तो उसे चाहिए की वो अपनी सवारी उस शख्स को दे दे जिसके पास सवारी नहीं है और जिस शख्स के पास ज्यादा खाना हो तो उसे उन लोगों को दे देना चाहिए जिन्के पास खाना नहीं है.

अबू सइद खुदरी (रदी) का कहना है की रसूलुल्लाहﷺ ने माल की बहुत सारी किस्मे गिना डाली यहां तक की हमने ये समझा की हम मेंसे किसी का ज़रूरत से ज्यादा माल में कोई हक नहीं है.

आने वाले ने दाएं-बाएं नज़र दौडाई क्योंकि असल में वो जरूरतमंद था चाहता था की लोग उस्की मदद करे.

३} अबू दाउद की रिवायत का खुलासा | रावी सइद बिन अबू हिन्द व अबू हुरैरा रदी.

शैतानी घरों से मुराद वो मकान है जिन्हें लोग बिला ज़रूरत बनाते है सिर्फ अपनी मालदारी दिखाने के लिए, ना तो वो

लोग उसमे रहते है और ना दूसरे जरूरतमंद लोगों को रहने के लिए देते है.

इस्लाम दौलत के इस किस्म के दिखावे को पसन्द नहीं करता, रसूलुल्लाहﷺ ने ऐसे मकान नहीं देखे क्यों की उस ज़माने में ऐसे नुमाईशी लोग नहीं थे हां बाद में हमारे बुझरूगो ने ऐसे मकान देखे और हम भी अपने ज़माने के दौलतमंद मुसलमानो के यहां ऐसे नुमाइशी मकानात देख रहे है.

४} अबू दाउद की रिवायत का खुलासा | रावी मुआज रदी.

हम रसूलुल्लाहﷺ के साथ एक गजवा में गए, लोगों ने ठहरने की जगहो को तंग कर दिया और रास्ता बन्द कर दिया, आपﷺ ने एक आदमी भेझ कर ऐलान कराया की जो शख्स ठहरने की जगह में तंगी पैदा करे या रास्ता बन्द करेगा तो उस्को जिहाद का सवाब ना मिलेगा.

इस हदीस से मालूम होता है की लोगों ने अपनी ठहरने की जगह को लम्बा चौडा और कुशादा कर दिया था और फैलकर ठहरे थे जिसके नतीजे में चलने वालों को परेशानी

हो सकती थी इसलिए रसूलुल्लाहﷺ ने ये ऐलान कराया, जो लोग सफर में निकलें और उन्का ये सफर नेकी का सफर हो, तो उन्को चाहिए की फैलकर ना ठहरे, बल्की उतनी ही जगह ले जितनी की ज़रूरत हो ऐसा ना करे की दूसरे साथियों को जगह ना मिले, या आने-जाने में उन्को परेशानी हो.